3

मुग़ल काल के गांव

मुग़लों के समय में भारत पूरी दुनिया में एक संपन्न देश माना जाता था। मुग़लों, राजपूतों और आफगानों ने इसी संपन्नता पर अधिकार जमाने की लड़ाई लड़ी थी। इसी संपन्नता के बल पर जागीरदार ज़मीदार और राजा-महाराजा ऐश-ओ-आराम की ज़िन्दगी बिताते थे। मुग़ल बादशाह लाल किला और ताजमहल जैसी इमारतें खड़ी करते थे। इसी संपन्नता को देखकर यूरोप से व्यापारी यहां आये।

मगर भारत की यह समृद्धि आसमान से तो नहीं टपकी। उसको किसानों ने खेतों में मेहनत से उगाया। मुग़ल साम्राज्य की ताकत और मुग़ल अमीरों की सपंन्नता का राज़ इन्हीं खेतों मे, इन्हीं किसानों की मेहनत में छिपा हुआ था। इन किसानों की उपज लगान के रूप में मुग़ल बादशाह व जागीरदार लेते थे।

उन किसानों का जीवन कैसा था, उनके घर कैसे थे, वे क्या उगाते थे, वे कितना कर देते थे, कितना बचा पाते थे? चलो, इस पाठ में उन्हीं किसानों के जीवन के बारे में पढ़ें।

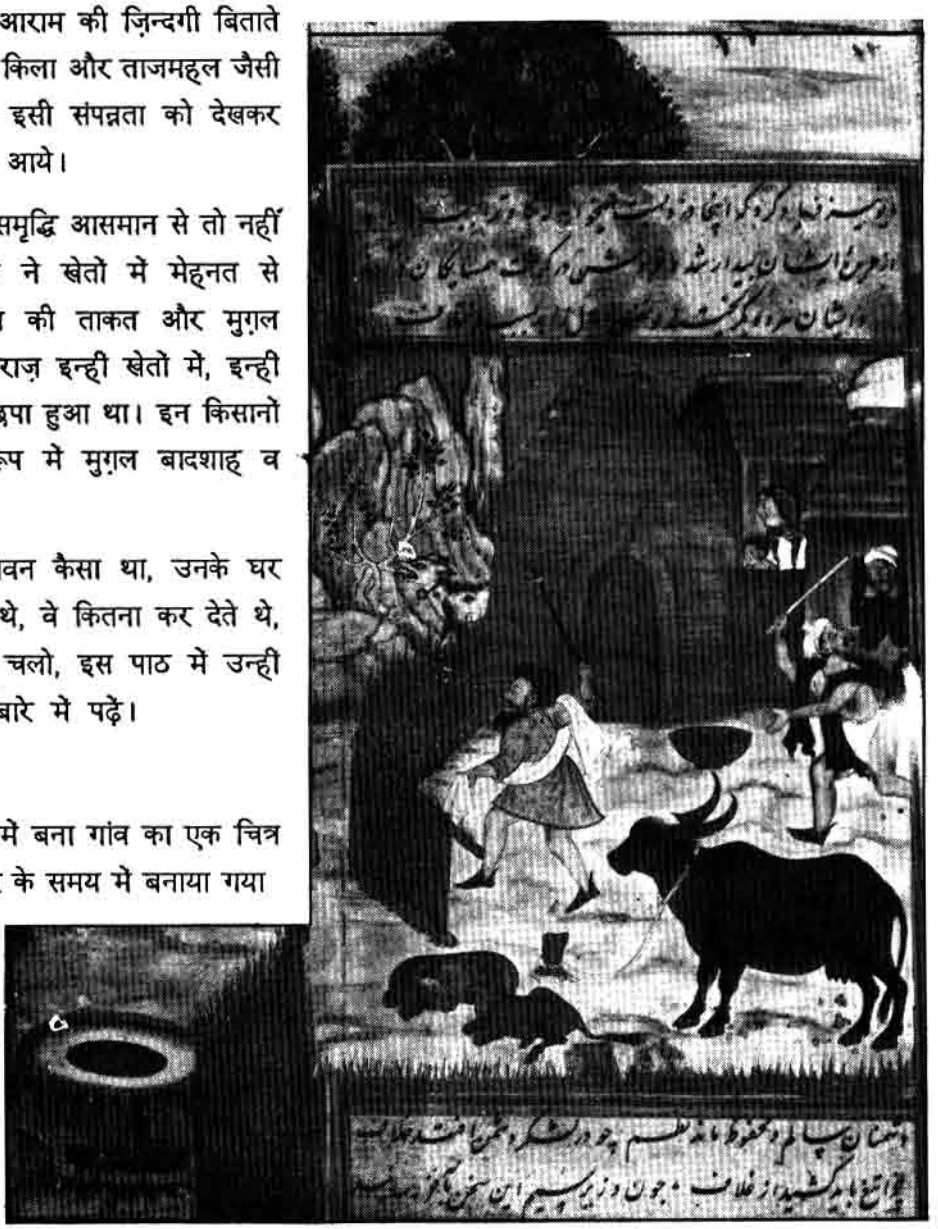

गांव

चित्र-1 मुग़ल काल में बना गांव का एक चित्र है। इस चित्र को अकबर के समय में बनाया गया था। इस चित्र से तुम्हें उस समय के गांव के घर-बार, लोगों के पहनावे और काम के बारे में क्या-क्या बातें पता चलती हैं?

चित्र 2: यह चित्र जगन्नाथ नाम के चित्रकार ने बनाया था। इस चित्र में तुम्हें क्या-क्या चीज़ें दिख रही हैं? इससे तुम्हें मुग़ल काल के गांवों में खेती के बारे में क्या बातें पता चलती हैं?

गांव में धनी लोग थे और निर्धन भी। एक साधारण किसान के घर का चित्र बिचित्र नाम के चित्रकार ने बनाया। यह घर किन चीजों से बना है?

आम किसानों के ऐसे ही कच्चे घर होते थे। युद्ध, अकाल, सूखे और अत्याचार के मारे भागने वाले किसान इन कच्चे घरों को पल में छोड़ कर भागते और पल में नई जगह पर फिर से बना लेते।

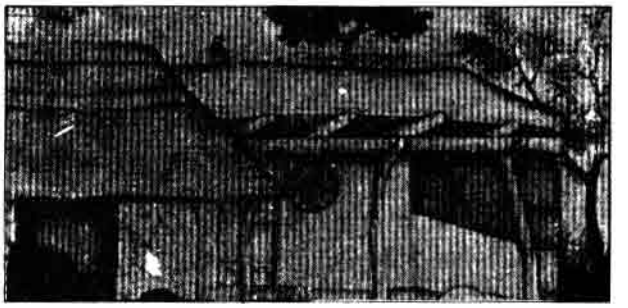

चित्र 3: साधारण किसान का घर

भोजन

अब आम किसानों की झोपड़ियों के अन्दर की झलक ले। मिट्टी के बने थोड़े से बर्तन ही मिलते। उन दिनों तांबा या पीतल महँगा था और अल्युमीनियम व स्टील का तो चलन ही नहीं हुआ था।

मिट्टी के उन बर्तनों में कभी मूंग और चावल की खिचड़ी पकती और कभी बाजरे या ज्वार की रोटी सिकती। खाने के साथ में थोड़ी सी सब्ज़ी और घी भी हो जाता। उन दिनों दूध अधिक होता था इसलिए घी सस्ता था। घी के अलावा तिल और सरसों का तेल भी उपयोग में लाया जाता था।

उन दिनों घी अधिक क्यों होता होगा — चर्चा करो।

तब मूंगफली नहीं होती थी इसलिए उसका तेल भी नहीं मिलता था। तब बहुत सी ऐसी सब्ज़ियां भी नहीं होती थीं जिन्हें तुम आज खाते हो।

मुग़ल काल तक भारत में आलू, कद्दू, टमाटर, मटर, हरी मिर्च, अमरूद, सीताफल उगते ही नहीं थे। ये सब दक्षिण अमेरिका की सब्ज़ियां व फल हैं जो मुग़ल काल के अन्त में यूरोप के व्यापारी भारत लाए।

लेकिन सेम, पालक, शकरकन्द, तोरी, गिलकी, करेला, लौकी, भिण्डी, भटा जैसी सब्ज़ियां और केला, आम, कटहल, तरबूज़, बेर, अंगूर, अनार जैसे फल खूब होते थे।

उन दिनों लाल मिर्च तो नहीं थी। तो वे लोग भोजन में मिर्च की जगह क्या खाते होंगे?

कपड़े और पहनावा

चित्र-3 को ध्यान से देखो तो दीवार पर एक चरखा टंगा दिखेगा।

उन दिनों घर-घर चरखा चलने लगा था। तुम जानते हो कि तुर्की-ईरानी लोगों के साथ चरखा भारत में आया। अकबर व जहांगीर के समय तक आते-आते चरखे का उपयोग लोगों ने खूब अपनाया। महिलायें घर-घर सूत कात लेती थीं और गांव का जुलाहा कपड़ा बुन देता था। इस समय के पहले भारत के लोग कम कपड़ा पहनते थे। पर चरखे के चलन के बाद ज़्यादा मात्रा में कपड़ा पहना जाने लगा।

गांव के लोगों के चित्र मिस्किन नाम के चित्रकार ने बनाए। लोग कई तरह के कपड़े पहने दिख रहे हैं। ग्वाले, किसान, जोगी, बच्चे, औरतें व अन्य कई लोग हैं। जो बहुत गरीब थे और बहुत गरीब नहीं थे, वे लोग इन चित्रों में अलग-अलग पहचान में आ रहे हैं। चित्र को ध्यान से देख कर उन्हें पहचानो।

खेतीबाड़ी

आज की तरह मुग़ल काल में भी खेती की सबसे बड़ी समस्या सिंचाई थी। उन दिनों लोगों को तालाब, नहर और कुंओं से काम चलाना पड़ता था। आज की तरह मोटर पंप या बिजली तो नहीं थी।

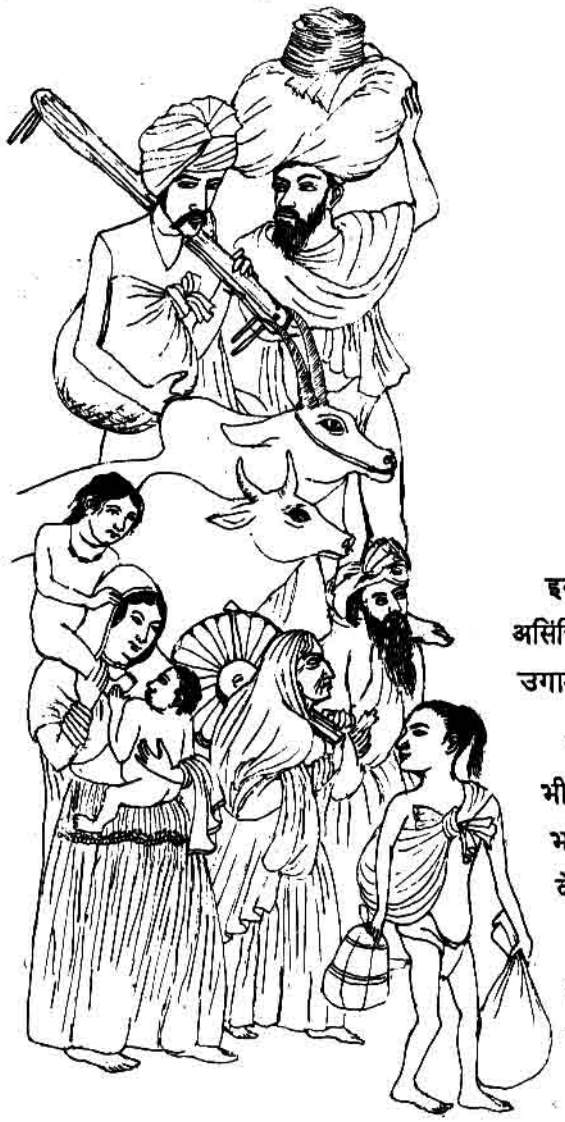

इस कारण सिंचाई थोड़ी ही ज़मीन पर हो पाती थी। अधिक असिंचित ज़मीन थी। इसमें मुख्यतः बारिश (खरीफ) की फसल उगायी जाती थी।

रासायनिक खाद, दवा, नए बीज- इनके न होने से उत्पादन भी आज की तुलना में बहुत कम होता था। मगर उन दिनों भारत में जितना उत्पादन होता था उतना शायद यूरोप के देशों या किसी भी अन्य देश में नहीं होता था।

भारत में नदियों के मैदानों की मिट्टी अत्यधिक उपजाऊ है। इसका फायदा किसान बड़ी मेहनत और सूझबूझ से उठाकर साल में दो-दो फसल लेते थे। उन दिनों यूरोप के किसान प्रत्येक खेत से तीन साल में एक बार या दो

बार ही फसल ले पाते थे। यूरोप में अधिकांश प्रदेशो में मिट्टी भारी और गहरी है। उसे पलटने के लिए भारी और खास तरह के हल की ज़रूरत होती है। ऐसे हल उन दिनो बने नही थे। इस कारण उन दिनो यूरोप के खेतों का उत्पादन भारत के मैदानो के उत्पादन से बहुत कम था।

भारतीय किसान हर साल दो फसल तो लेते ही थे- साथ ही भारत की गर्म जलवायु में इतनी विभिन्न किस्म की फसले उगती थी कि यूरोपीय यात्री जो उन दिनो भारत आये, दंग रह जाते थे। एक ही गांव मे खरीफ मे 15 तरह की फसले और रबी में 10 तरह की फसले उगायी जाती थी। इनके अलावा फल और सब्ज़ियां भी। उन दिनो शायद ही किसी और देश में इतनी विविध तरह की फसलें एक ही गांव में उगायी गयी हो। भारत की संपन्नता, जिसकी विश्व भर में चर्चा थी, का यही आधार था।

मगर इतना सब उगाने के बावजूद किसान बहुत गरीब थे। बहुत से बच्चे कुपोषण के कारण मौत के शिकार होते थे। हमेशा आम लोगो के सिर पर भूख मंडराती रहती थी।

किसानो की हालत

जब पर्याप्त वर्षा होती और फसल भी अच्छी होती थी तो किसान किसी तरह गुज़ारा कर लेते थे। लेकिन वे कठिन दिनो कि लिए कुछ भी नही बचा पाते थे। इसलिए जब बारिश कम हो जाती और भू-जल सूख जाता और फसल न उग पाती तो किसानो के पास गुज़ारा करने के लिए कुछ भी नही होता था। तब हज़ारों की संख्या मे लोग भूख और महामारी के शिकार हो जाते। तब ऐसी हालत होती थी कि लोग घास व जंगली पेड़ो के पत्ते खाने लगते। यहां तक कि अपने आप को और अपने बच्चों को धनी लोगो के हाथ बेच देते थे। तब लोग खाने की तलाश में अपने गांव छोड़कर दर-दर भटकते थे। इस प्रकार सैकड़ो गांव वीरान हो कर उजड़ जाते थे। कभी-कभी ऐसे भयंकर अकाल का विवरण मिलता है जब मनुष्य, मनुष्य को खाने पर उतर आते थे।

यह है दास्तान मुग़ल काल के किसानो की- सारी संपन्नता उनके खेतो में पैदा होती थी और सारी दरिद्रता उन्ही के घरो में बसती थी।

तुम सोच रहे होगे कि यह कैसे- इतनी सारी फसल जो वे उगाते थे, उसका क्या होता था?

लगान

खेती की उपज का एक बहुत बड़ा हिस्सा लगान और करो के रूप मे किसानो के हाथों से छिन जाता था। अकबर के समय में किसानो से फसल का एक तिहाई भाग लिया जाता था। पर जहांगीर और शाहजहां के समय लगान का बोझ बढ़ता गया। सन् 1700 तक आते-आते किसानो की आधी उपज लगान में ली जाने लगी। तुम सोच सकते हो कि लगान देने के बाद और बीज का अनाज रखने के बाद कितना बचता होगा जिससे वे चैन से गुज़ारा भी कर सकें?

आओ, उन दिनो का एक गांव घूम कर देखें। बादशाह अकबर, जहांगीर, शाहजहां और औरंगज़ेब के समय में गांव के लोगो पर क्या गुज़री जाने।

एक गांव की कहानी

(गांव करारिया, सूबा आगरा)

अब अनाज नहीं, रुपये में देना है लगान

सूबा आगरा में बसा था गांव करारिया। गांव तो छोटा ही था- यही कुछ अस्सी-पचासी किसानों के घर थे। चार-पांच कारीगरों के घर भी थे, जो लकड़ी लोहे और चमड़े की चीज़ों को बनाते थे। कुछ कारीगर मिट्टी के बर्तन बनाते थे और कुछ कपड़े बुनते थे। अधिकतर किसान जाट जाति के थे, मगर कुछ गूजर भी किसानी करते थे।

सन् 1580 की बात थी। खरीफ की फसल खेतों में लहलहा रही थी- बाजरा, ज्वार, मूंग, मोठ, तिल और कोदों। उन्हीं दिनों पास के कस्बे बयाना से घुड़सवारों का एक दल गांव में आया। आते ही वे सब ज़मींदार सूरज देव जाट के घर पहुंचे। कुछ ही देर में पूरे गांव में खबर फैली कि ये लोग किसानों पर कर (लगान) तय करने आये हैं और हर किसान का खेत नापेंगे।

ज़मींदार के घर गांव के पटेल और पटवारी को बुलवाया गया। ये लोग गांव के प्रमुख और संपन्न किसान थे जो लगान इकट्ठा करने में मदद करते थे।

शाम को पंचायत बुलायी गयी और पटेल के घर के सामने चौपाल में सब गांववाले इकट्ठा हो गये। बयाना से आया कर निर्णय करने वाला अधिकारी पूरणमल बोला, "हम लोग यहां अकबर बादशाह के मंत्री मुज़फ्फर खान और राजा टोडरमल के आदेश से आये हैं। बादशाह ने पूरे साम्राज्य में कर तय करने और वसूल करने की व्यवस्था को बदला है। इस वर्ष से आप लगान में अनाज नहीं, बल्कि पैसे देंगे।"

यह सुनते ही लोगों में खुसुर-फुसुर फैल गई। कुछ देर बाद एक किसान उठकर बोला, "मगर अब तक तो हम अनाज में ही लगान देते आये हैं।" पूरणमल बोला, "आप लोग बयाना में अपनी फसल बेचकर उस पैसे से लगान दीजिए।"

ज़मींदार सूरज देव किसानों को समझाता हुआ बोला, "परेशान क्यों होते हो? पहले भी तो फसल का एक तिहाई ही देते थे। अब भी उतना ही देना है मगर अनाज में नहीं, पैसों में।"

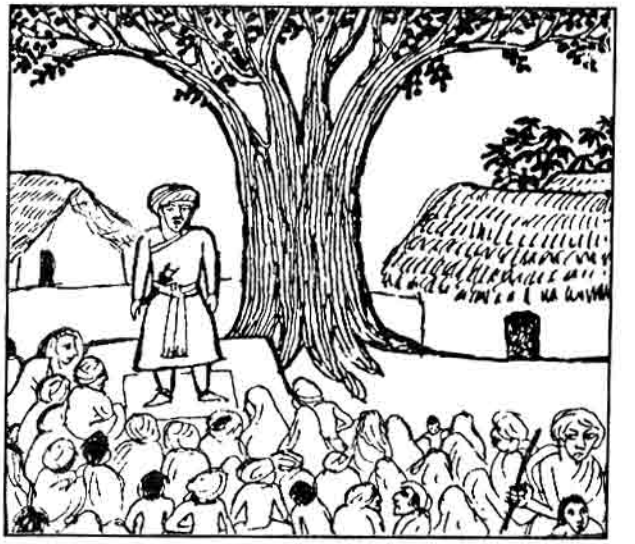

चित्र 5: चौपाल में चर्चा

एक किसान बोला, "हमने सुना था कि अकबर बादशाह अच्छे हैं तो सोचा शायद लगान कम करेंगे। अब तो मुसीबत बढ़ा दी।"

किसमें बदलाव किया गया— लगान की मात्रा में या लगान के रूप में?
मुग़ल काल के किसानों की तुलना में आजकल किसानों पर लगान अधिक है या कम?
अनाज के बदले रूपयों में लगान लेने से जागीरदार को क्या फायदा हुआ होगा?

किसान बंजारों को अनाज बेच आये

उस वर्ष गांव के सारे किसान गाड़ियों में अनाज लादकर बयाना ले गये।

आसपास के बहुत से गांव के किसान भी अपना अनाज ले आये। बयाना में इस साल पहले से कहीं अधिक अनाज बिकने आया।

उन दिनों बंजारे (व्यापारी) ही अनाज का व्यापार करते थे। तीस चालीस बंजारों का झुण्ड 200-300 बैलों के साथ जगह-जगह घूमता रहता था। गांवों से अनाज, शक्कर व गुड़ खरीदकर दूर-दूर के शहरों में जाकर बेचते थे। वे हिमालय के पहाड़ों से शुरू करके, खरीदते बेचते खम्भात, बंगाल और दक्षिण भारत तक जाते थे।

इन्हीं बंजारों के हाथ सब किसान अपनी-अपनी फसल बेच आये। कुछ अनाज के बदले में बंजारों से नमक ले आए और बाकी अनाज के बदले में पैसे लेकर लौटे- लगान जो देना था।

लगान की वसूली

कुछ दिन बाद जागीरदार का आमिल गांव में आ पहुंचा।

क्या तुम्हें याद है आमिल कौन था और वह क्या काम करता था?

आमिल ज़मीदार सूरज देव जाट के घर गया और उससे कहा कि वह गांव वालों से लगान जमा करके रखे। आमिल ने बताया, "आपके गांव के कुल 9,000 बीघे पर खरीफ की फसल बोयी गयी है। मैंने पटवारी के साथ हिसाब लगाया है, कुल मिला कर 17,000 रूपये बनते हैं। आप यह रकम इकट्ठा करके रखिए। मैं अपने जागीरदार के दूसरे गांवों में भी चक्कर लगाकर आता हूं। दस दिन में लौटूंगा तो आप से रूपये ले लूंगा।"

ज़मीदार सूरज देव जाट ने पटवारी और पटेल को बुलाया और उनसे किसानों से लगान इकट्ठा करने को कहा।

पटवारी बोला, "अगर कोई देने से इन्कार कर दे तो?"

ज़मीदार बोला, "मेरे दो घुड़सवार और चार सिपाही आपके साथ चलेंगे - देखते हैं किस की हिम्मत है मना करने की।"

लगान इकट्ठा करने में तीन-चार दिन लग गए। कुछ किसानों के

चित्र 6 : बंजारों की टोली

इस धमकी से किसान डर गए। चुपचाप अपने घर लौट आए। एक महीना ही बीत पाया था कि उनमें से एक परिवार रातों-रात गांव से भाग निकला और खूब खोजबीन के बाद भी उसका पता न चला।

गांव के पटेल ने लोगों को जाने से रोका। उसने ऐसा किस के भले के लिए किया?
ज़मींदार सिपाही रखते थे। इन सिपाहियों के काम के बारे में तुम अब तक क्या समझ पाए?

खेत बिन बोए न रहे

मुग़लों के समय में ज़मीन बहुत खाली पड़ी थी। जो जितनी चाहे ज़मीन जोत सकता था। इसी कारण दुख दर्द के मारे किसान गांव छोड़ कर दूसरी जगह पर खेती करने की आशा में अक्सर चले जाते थे। इस बात से जागीरदार व ज़मींदार परेशान रहते थे। वे तो यही चाहते थे कि उनके इलाके में ज़्यादा से ज़्यादा किसान आकर बसें और ज़्यादा से ज़्यादा ज़मीन पर खेती करें। इसीलिए वे नए आए लोगों को ज़मीन देते थे और लगान में छूट भी।

वे अपने इलाके से भाग कर जाते हुए किसानों को रोकने की भी भरपूर कोशिश करते थे। मगर वे किसान को भागने से न रोक पाएं तो किसी दूसरे किसान को उसके खेत जोतने के लिए दे देते थे ताकि फसल हो और लगान पूरी भरी जा सके।

हां, यह ज़रूर था कि अगर ज़मीन का मालिक लौट आता तो उसे उसकी ज़मीन वापस मिल जाती थी। पर उसकी गैर-हाज़िरी में उसके खेत बिन बोए नहीं रह सकते थे। क्योंकि अगर ऐसा होता और लगान पूरी न मिलती तो जागीरदारों, ज़मींदारों और बादशाह का काम कैसे चलता? बाकर खान जैसे अमीरों का क्या होता ?

क्या इस स्थिति की कोई बात आज भी देखने को मिलती है?

शासन करने वाला वर्ग

मुग़ल साम्राज्य में दिन-ब-दिन बाकर खान जैसे बड़े अमीरों की संख्या बढ़ रही थी। अकबर का शासन जब शुरू हुआ तो केवल 51 बड़े अमीर थे। यह संख्या लगातार बढ़ती गई और सन् 1700 में 500 से ज़्यादा बड़े अमीर हो गए।

आखिर इन सबका खर्चा कहां से निकलता?

करारिया में भी कर बढ़े

बादशाह शाहजहां और औरंगज़ेब के समय तक आते-आते लगान बहुत बढ़ गया। अकबर के समय किसान फसल का 1/3 हिस्सा लगान में देते थे। अब उन्हें फसल का आधा हिस्सा लगान में देना पड़ा। जागीरदार इससे भी अधिक कर वसूल करने की कोशिश में थे।

सन् 1665 की बात होगी। मुग़ल बादशाह औरंगज़ेब ने करारिया गांव राजा जय सिंह को जागीर में दिया हुआ था। जय सिंह मुग़ल साम्राज्य का एक प्रमुख अमीर था।

खरीफ की फसल कटते ही राजा जय सिंह का आमिल लगान वसूल करने गांव पहुंचा। उसने जाते ही ज़मींदार से कहा, "इस बार एक नया लगान लिया जाएगा। पटवारी का भत्ता किसान देंगे, जागीरदार नहीं देगा।"

यह सुनते ही ज़मींदार भड़क उठा। बोला, "यह कैसे हो सकता है? जिस तरह आप किसानों से कर ले रहे हैं उनके पास खाने के लिए भी नहीं बचता है। स्थिति यह बनती जा रही है कि हम किसानों से वो कर तक वसूल नहीं कर पा रहे हैं जो हमेशा

से हमारा हक रहा है। आप जाइए, अपने जागीरदार को बता दीजिए- इस गांव के लोग यह नया कर नही देगे।"

तुम जानते हो कि ज़मीदारो को किसानो से कम लगान देनी पड़ती थी। उन्हे किसानो से इकठ्ठी की गई लगान मे से एक हिस्सा भी मिलता था। उल्टे वे खुद किसानो से कई तरह की वसूलियां करते थे।

पुराने समय के भोगपतियो की तरह (जिनके बारे मे तुम कक्षा-7 मे पढ़ आए हो) ज़मीदार समय-समय पर किसानो से उनके घर पर, ढोर पर, शादी-ब्याह पर, यात्रा पर, त्यौहार पर- कुछ न कुछ वसूल करने के आदी थे।

ज़मीदार ने आमिल का विरोध किस के भले के लिए किया?

पंचायत मे भी किसानो ने आमिल को बहुत सुनाया और कहा कि आसपास के क्षेत्र मे कोई यह नया कर नही देता तो वे क्यो दे? इतना सब सुन कर भी आमिल अटल रहा और यह धमकी देते हुए लौटा कि अगर करारिया से पटवारियो का भत्ता नही मिला तो फौज लाकर तबाही मचा देगा।

अगले दिन पंचायत मे गांव वालो ने तय किया कि वे शिकायत करने राजा जय सिंह के पास आगरा जाएंगे। उन्होने आसपास के कई गांव के लोगो को साथ कर लिया और करीब 20 लोग आगरा पहुंचे।

किसानो ने जागीरदार से शिकायत की

राजा जय सिंह के आलीशान महल मे किसानो ने अपने हालात सुनाए। एक किसान बोला, "महाराज, पिछले साल मेरे खेत मे 50 मन ज्वार उगा। 25 मन आमिल लगान मे ले गया। ज़मीदार ने अलग से 7 मन ले लिए। फिर पिछला बकाया बता कर आमिल ने 5 मन और ले लिए। इसके ऊपर गांव के महाजन ने 2 मन वसूल कर लिए क्योकि पिछले साल मुझे उससे बीज के लिए उधार लेना पड़ा था। अब इस वर्ष एक नया कर लगाया जा रहा है। हम कहां से देंगे और देंगे तो खाएंगे क्या?"

इस तरह की बाते सुन कर जागीरदार नया कर हटाने को राज़ी हो गया और बोला कि वह आमिल को मना कर देगा। किसान राहत की सांस लेकर गांव को चले।

पर अगले ही वर्ष राजा जय सिंह का तबादला हुआ और एक नया जागीरदार आया। उसके आमिल ने फिर से नया कर वसूल करने की कोशिश की।

चित्र 7 : जागीरदार से शिकायत

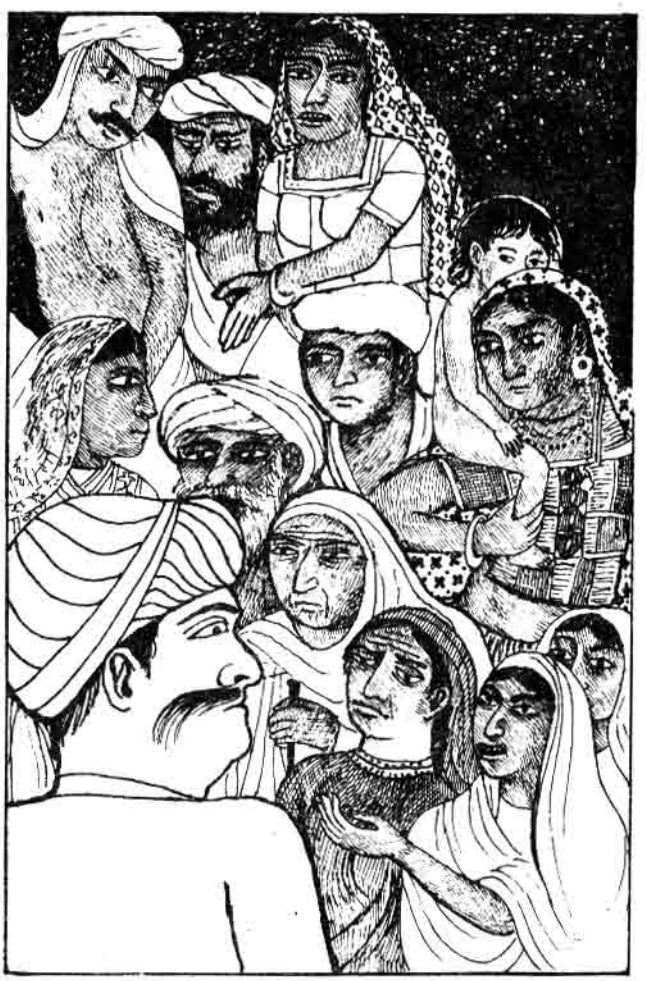

जब ऐसा हुआ तो करारिया गांव के 40 परिवार गांव छोड़कर दूसरे गांव चले गये।

किसानों ने बादशाह से फरियाद की

इस तरह देहली, आगरा, बयाना और आसपास के गांवों में स्थिति लगातार बिगड़ती गयी। सब तरफ जागीरदारों और उनके आमिलों की ज़्यादतियां बढ़ गई थी। कई गांवों के किसान फरियाद लेकर बादशाह औरंगज़ेब के पास भी पहुंचे।

बादशाह ने उन्हें वादा तो किया कि उनकी रक्षा की जायेगी, मगर वह अपने जागीरदारों के खिलाफ कुछ नही करना चाहता था। उसने केवल अपने अधिकारियों के नाम कई फरमान जारी किए कि ग़ैर कानूनी करों को वसूल न किया जाये। किसी भी हालत में किसान से आधी उपज से अधिक न ली जाये, उन्हें खेती बढ़ाने में सहायता दी जाये। मगर कोरी बातों को कौन मानने वाला था?

मुग़ल शासन के खिलाफ ज़मीदारों का विद्रोह

इस बीच करारिया गांव में खबर पहुंची कि मथुरा के पास गोकुल जाट नामक एक ज़मीदार ने बादशाह के खिलाफ विद्रोह कर दिया है और आसपास के गांव के किसान उसके साथ हो लिए हैं। करारिया गांव का ज़मीदार भी उनके साथ होने की बात सोचने लगा। मगर उसे डर भी था- आखिर मुग़ल सेना का सामना कैसे करें। कुछ ही दिनों बाद यह खबर आयी कि मुग़ल सेना से युद्ध में गोकुल जाट मारा गया। इस तरह समय बीतता गया। कहीं एक-दो ज़मीदार विद्रोह करते, कहीं गांव वाले गांव छोड़कर भाग जाते और कहीं वे विद्रोही ज़मीदारों के साथ हो जाते।

किसानों को तो मुग़ल शासन (यानी जागीरदार और बादशाह) से यह शिकायत थी कि उनसे हद से ज़्यादा लगान लिया जाता था।

पर ज़मीदारों को भी मुग़ल शासन से क्या यही शिकायत हो सकती थी?

फिर ज़मीदारों ने मुग़ल शासन की खिलाफत क्यों की?

इन प्रश्नों पर विचार करो:
अगर मुग़लों का शासन न होता तो क्या ज़मीदारों को ज़्यादा लाभ मिलता?
किसानों ने मुग़ल शासन से लड़ने वाले ज़मीदारों का साथ दिया, क्या यह उनके हित में था? समझा कर बताओ।

ज़मीदार राजा राम जाट का विद्रोह

गोकुल जाट के मरने के 14 साल बाद फिर एक विद्रोह की लहर चली। करारिया गांव से कुछ 30 किलोमीटर दूरी पर सिनसिनी नाम के गांव के ज़मीदार ने सन् 1683 में मुग़ल शासन के खिलाफ विद्रोह कर दिया। उसका नाम था राजा राम जाट। उसने किसानों से वसूल किया लगान जागीरदार को देने से इन्कार कर दिया क्योंकि वह अपना स्वतंत्र राज्य बनाना चाहता था। करारिया और आसपास के गावों में हलचल मची थी। खबर थी कि जागीरदार नवाब खान-ए-जहान सिनसिनी की तरफ बढ़ रहा है। आमेर के राजा बिशन दास ने भी अपनी सेना खान-ए-जहान की सहायता के लिए भेजी है।

इस बीच एक दिन करारिया गांव में सिनसिनी से कुछ किसान आ पहुंचे। करारिया गांव में भी उनके रिश्तेदार थे। उनके यहां वे आकर रहे। उसी दिन शाम को उन्होंने सारे गांव वालों को बुलाया और उन्हें सिनसिनी और राजा राम जाट की बातें बताईं। उन्होंने कहा, "अब की बार तो हम इन जागीरदारों के दांत खट्टे करके ही रहेंगे। चाहे कोई नवाब आये या आमेर का राजा। आप लोग भी हमारी मदद कीजिए।" एक किसान ने कहा, "हमें मुग़लों की फौज़ से लड़ने के

चित्र 8 : किसान विद्रोह में शामिल होने निकल पड़े

लिए नौजवान चाहिये। आपके गांव से अगर दस नौजवान भी इकट्ठे हों तो बहुत सहायता होगी।"

तुरन्त भीड़ में से एक आवाज़ आई, "मैं तैयार हूं। मैं सिनसिनी चलूंगा मुग़ल फौज से लड़ने।" इतने में कई और आवाज़े उठी, "हां, मैं भी चलूंगा।" इस तरह 22 लोग तैयार हुए। उसी रात को वे गांव से अपनी-अपनी पोटलियां बांध कर और अपनी-अपनी तलवारें और भाले लेकर राम जाट की सेना में शामिल होने चले।

इस तरह पन्द्रह-बीस दिन गुज़र गये। एक दिन सिनसिनी जाने वालों में से एक लड़का घोड़े पर हांफते हुए करारिया आ पहुंचा। वह गांव के बीच खड़े होकर चीख-चीखकर बोलने लगा, "सुनो-सुनो गांव वालो, सुनो, हमने कैसे नवाब खान-ए-जहान और आमेर राजा बिशन दास की सेनाओं को हराया। सुनो हमने कैसे जागीरदारों और फौजदारों को भगाया।"

गावं वाले इकट्ठे हुए तो उसने पूरी बात बतायी। राजा राम जाट की सेना ने नवाब खान-ए-जहान के दो हमलों को पीछे कर दिया था। नवाब की बुरी हालत हो गयी और वो भाग खड़ा हुआ था। गांव में खुशी और आश्चर्य की लहर चल पड़ी।

क्या मुग़लों की फौज को जाट किसानों ने हराकर भगा दिया? यह कैसे हो सकता है? सब लोग ज़मीदार सूरज देव को मनाने उसके घर की ओर चले, कि वो भी राजा राम जाट के साथ हो जाये।

तो इस तरह शुरू हुआ करारिया गांव वालों का विद्रोह। इस विद्रोह और कई ऐसे विद्रोहों की वजह से मुग़लों का शासन लड़खड़ाने लगा। उन्हें लगान मिलना बंद होने लगा। एक-एक रुपया वसूल करने के लिए उन्हें लड़ना पड़ा।

अभ्यास के प्रश्न

1. मुग़लो के समय में यूरोप की खेती और भारत की खेती मे क्या फर्क था?
2. लगान लेने की नई व्यवस्था मे क्या बाते बदली और क्या बाते पहले जैसी रही - सूची बनाओ।
3. करारिया गांव का ज़मीदार सूरज देव जाट जागीरदार के आमिल की किस प्रकार से मदद करता था?
4. क) करारिया के पटेल ने गांव छोड़ कर जाने वाले तीन किसानो को किस तरह रोका और क्यों?

   ख) मुग़ल काल मे अगर कोई किसान गांव खेत छोड़ कर चला जाता था तो उसकी ज़मीन का क्या किया जाता था? कारण भी समझाओ।
5. ज़मीदार किसानो से क्या लेते थे? जब जागीरदार ज्यादा कर लेने लगे तो ज़मीदार को परेशानी क्यो हुई?
6. किसान अपनी समस्याएं सुलझाने की कई कोशिशे करते थे। तुमने इन कोशिशो के क्या उदाहरण पाठ मे देखे?
7. क) राजा राम जाट ने किसके खिलाफ विद्रोह किया और क्यो?

   ख) करारिया गांव के कुछ लोग राजा राम जाट की सेना मे शामिल होने क्यो गए?

जहांगीर के दरबार मे गोवर्धन नाम का चित्रकार था। उसने ऐसा एक चित्र बनाया। एक गांव के बाहर कुछ लोग चलते फिरते गवैयो के गायन का रस ले रहे है। कुछ दूरी पर गांव दिख रहा है।

क्या यह गांव आज के गांवो जैसा दिखता है?

इस चित्र मे और क्या-क्या बाते तुम्हे दिख रही है?

इस चित्र मे जो लोग है वे क्या-क्या काम धंधे करते होंगे?